L-56 Political Science राजनीति विज्ञान Dr. Avinash Kumar

शक्ति के स्रोत (Sources of Power) - शक्ति के स्रोतों की पूर्ण सूची देना सम्भव नहीं है, क्योंकि विचारकों में इस सम्बन्ध में बहुत अधिक मतभेद है। धन सम्पदा, प्राकृतिक सम्पदा के साधन मानव शक्ति और शस्त्र, आदि किसी भी राष्ट्र की शक्ति के महत्वपूर्ण अवयव है। किन्तु उनका महत्व इस दृष्टि से आंकना होगा कि अन्य राज्यों के व्यवहार को प्रभावित करने में उनका उपयोग कहां तक किया जाता है। निःसन्देह धन सामान्यतया शक्ति का एक महत्वपूर्ण अवयव है, क्योंकि इसके द्वारा कोई राज्य दूसरे राज्य के व्यवहार को प्रभावित करने के लिए उसे पुरस्कार के रूप में बहुत कुछ दे सकता है। धन से शक्ति के अन्य अवयव खरीदे भी जा सकते है, जैसे बल प्रयोग के साधन। पर धन होने मात्र से शक्ति प्राप्त नहीं होती। उदाहरण- अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में संयुक्त राज्य अमरीका की बहुत समय तक कोई विशेष शक्ति नहीं थी, हालांकि वह बहुत धनी राष्ट्र था। किसी राष्ट्र या व्यक्ति की शक्ति केवल सम्पदा के स्वामित्व से नहीं बल्कि उसके उपयोग से प्राप्त होती है, वही राष्ट्र या व्यक्ति शक्ति सम्पन्न है जिसके पास ताकत के स्रोत भी है और जो अन्य राष्ट्रों और व्यक्तियों के व्यवहार को प्रभावित या नियन्त्रित करने में अपने साधनों का सफलता से उपयोग करना भी जानता है। जर्मनी की स्थिति को देखिए। प्रथम विश्वयुद्ध से पहले वह संसार के सबसे ताकतवर देशों में था। परन्तु युद्ध में हारने के बाद उसकी स्थिति नगण्य-सी रह गई। अब वह फिर एक महाशक्ति के रूप में उभर रहा है। यह ठीक है कि दो विश्व-युद्धों में जर्मनी को धन, जन और साधनों की हानि हुई। पर उसकी सबसे बड़ी हानि यह हुई कि दूसरे देशों को प्रभावित करने की उसकी सामर्थ्य जाती रही। शक्ति अनेक स्रोतों से उत्पन्न होकर विभिन्न रूपों में अपने आपको प्रकट करती है। पुनः मनुष्य को हाथी अथवा शेर से अधिक शक्तिशाली माना जाता है, क्योंकि उनमें ज्ञान और कुशलता अधिक होती है।

Avinash

नेपोलियन, हिटलर, लेनिन और गांधी ये सभी शक्तिशाली थे, लेकिन इनकी शक्ति के स्रोतों में भेद था।

शक्ति के कुछ प्रमुख स्रोत —

(i) ज्ञान (Knowledge) — शक्ति का प्रमुख स्रोत ज्ञान है। ज्ञान अपने साधारण अर्थ में व्यक्ति को अपने अनुभवों को पुन: प्रबन्धित करने और मिलाने की योग्यता प्रदान करता है। ज्ञान द्वारा व्यक्ति की अन्य विशेषताओं को इस प्रकार संचालित किया जाता है कि वे शक्ति का साधन बन सकें। व्यक्ति के नेतृत्व का गुण उसकी इच्छा शक्ति, उसकी सहन-शक्ति, अपने आप को अभिव्यक्त करने की शक्ति आदि विभिन्न तत्व शक्ति के महत्वपूर्ण पहलू हैं। इन तत्वों में से किसी एक की कमी शक्ति के समस्त रूपों को अकार्यकुशल बना सकती है और उसे पूरी तरह नष्ट कर सकती है।

(ii) प्राप्तियां (Possessions) — प्राप्तियों के अन्तर्गत भौतिक सामग्री, स्वामित्व एवं सामाजिक सामग्री की शक्ति, एक व्यक्ति को समाज में प्राप्त स्थिति और स्तर, आदि को सम्मिलित किया जा सकता है। पुन: बिना सम्पत्ति के भी एक व्यक्ति अन्य व्यक्तियों के कार्यों को प्रभावित कर सकता है और सम्पत्ति के होने पर भी आवश्यक नहीं है कि वह दूसरों के कार्यों को प्रभावित कर सकेगा।

(iii) संगठन — 'संगठन ही शक्ति है' (Unity is strength)। विभिन्न प्रतिद्वन्द्वितापूर्ण इकाइयां आपस में मिलकर संघ बना लेती हैं तो उनकी शक्ति कई गुना बढ़ जाती है। उदाहरण - मजदूर संघ, व्यापारिक संघ इत्यादि। पुन: शक्ति की दृष्टि से सबसे बड़ा संघ स्पष्टतया राज्य ही है।

(iv) आकार — आकार के साथ यदि संगठन का मेल हो तो अनेक बार इसे शक्ति का परिचायक मान लिया जाता है।

शक्ति के स्रोत एवं आधार के रूप में विश्वास का भी पर्याप्त महत्व है। पुन: शक्ति की महानता इस बात से निर्धारित की जाती है कि वह मानव मस्तिष्क पर प्रभाव डालने में कितनी सक्षम है। प्रो. मैकाइवर के अनुसार, शक्ति की कार्यकुशलता उन विभिन्न परिस्थितियों के द्वारा बढ़ती या कम होती रहती है, जिसके अधीन उसे प्रयोग किया जाता है।

Scanned with CamScanner